# दो एशियाई शक्तियां और एक द्वीप

लेखक- टी. रामकृष्णन (संपादक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

30 सितम्बर, 2019

## "चीन के विपरीत, भारत ने श्रीलंका में सिरिसेना के शासन के दौरान अधूरा कार्य ही किया है।"

कोलंबो में लोटस टॉवर, जिसे हाल ही में जनता के लिए खोला गया है, श्रीलंका-चीन संबंधों का नवीनतम प्रतीक माना जा रहा है। इस संरचना का निर्माण करने के लिए एक समझौते पर 2012 में दोनों देशों द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे, जो एक बहुआयामी दूरसंचार टॉवर के रूप में सेवा देगा।

हालांकि, यह विडंबनापूर्ण लग सकता है कि परियोजना का अधिकांश कार्य एक ऐसे शासन के तहत हुआ, जब 'चीन-विरोधी विचार' अपने चरम पर था। 2015 के राष्ट्रपति चुनाव के लिए, मैथिपाला सिरिसेना को समर्थन देने वाले रानिल विक्रमसिंघे ने लोगों को आश्वासन दिया था कि एक अन्य चीनी परियोजना यानी 1.4 बिलियन डॉलर के कोलंबो पोर्ट सिटी को खत्म कर दिया जाएगा। श्री सिरिसेना के राष्ट्रपति बनने के तुरंत बाद, पोर्ट सिटी का काम अधर में लटक गया। इसके बाद, हंबनटोटा बंदरगाह का भविष्य भी अंधेरे में जाता प्रतीत होने लगा, जिसे भारत को महिंद्रा राजपक्षे द्वारा नवंबर, 2005 में श्रीलंकाई राष्ट्रपति बनने पर पेश किया गया था। भारत ने कहा था कि वह इस बंदरगाह के मुद्दे के संदर्भ में आर्थिक और रणनीतिक कोण की पूरी तरह से जांच करने के बाद ही फैसला लेगा।

### दो अलग-अलग रिकॉर्ड

हालाँकि, यह सब अब इतिहास है क्योंकि कोलंबो-बीजिंग संबंध समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। चीन इन परियोजनाओं पर सभी विवादों को हल करने में सक्षम रहा है। पोर्ट सिटी का निष्पादन बिना किसी बड़ी अड़चन के चल रहा है। जब यह पूरी तरह से बन जायेगा, तो भारत की चिंता का सबब बन सकता है क्योंकि यह कोलंबो बंदरगाह के समीप ही होगा, जो भारत के लिए एक प्रमुख ट्रांसशिपमेंट हब के रूप में कार्य करता है। एक चीनी कंपनी ने हंबनटोटा को 15,000 एकड़ की संबद्ध भूमि के साथ 99 वर्षों के लिए लीज (पट्टे) पर लिया है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि श्रीलंका बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का सदस्य देश है।

कुछ अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों के इस तर्क के बावजूद कि चीन के साथ आर्थिक संबंध श्रीलंका को एक 'ऋण जाल' में डाल देगा, आर्थिक मोर्चे पर द्विपक्षीय संबंध मजबूत ही होते दिख रहे हैं। श्रीलंका के सेंट्रल बैंक की 2018 की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, चीन से आयात 18.5% है, जो भारत के 19% से थोड़ा ही कम है।

दूसरी ओर, भारत मई, 2014 से अपनी 'पड़ोस पहले' नीति के बावजूद सिरिसेना के शासन के दौरान यह दावा नहीं कर सकता है कि उसने श्रीलंका के लिए बहुत कुछ किया है। कोलंबो पोर्ट पर ईस्ट कंटेनर टर्मिनल विकसित करने के लिए जापान और श्रीलंका के साथ मई में एक संयुक्त उद्यम सौदा शुरू करने के अलावा, भारत ने श्रीलंका में किसी भी बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजना को शुरू नहीं किया है।

उत्तरी प्रांत में कांकेशन्थुराई बंदरगाह के जीर्णोद्धार के लिए एक परियोजना की स्थिति भी उतनी बेहतर नहीं है, जिसके लिए भारत ने 2018 की शुरुआत में 45 मिलियन डॉलर से अधिक प्रदान किये थे। उत्तर में पालली हवाई अड्डे (जहाँ एक सीमित रूप से वाणिज्यिक उड़ान सेवाएं शीघ्र ही शुरू होने की उम्मीद है) को विकसित करने के लिए भारत के प्रस्तावों में और मटाला राजपक्षे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे में एक नियंत्रित हिस्सेदारी के अधिग्रहण में बहुत कम प्रगति हुई है और सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, आर्थिक और तकनीकी

सहयोग समझौते, मौजूदा द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते का एक उन्नत संस्करण, ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है।

हाल के वर्षों में, भारत सरकार के सामाजिक क्षेत्र की कुछ ही परियोजनाओं (जैसे- गृह युद्ध के कारण उत्तरी, पूर्वी प्रांतों और साथ ही पहाड़ी क्षेत्र में तमिलों के लिए 60,000 घरों का निर्माण और द्वीप पर एम्बुलेंस सेवाओं का प्रावधान) को शुरू किया गया है। इन दोनों को भारत सरकार के अनुदान का उपयोग करके चलाया जा रहा है। जुलाई में, एक प्रमुख रेलवे खंड को अपग्रेड करने के लिए एक समझौते (91 मिलियन) पर हस्ताक्षर किए गए थे, जो उत्तर और दक्षिण को जोड़ता है।

हालाँकि, विकास में और अधिक सहयोग करने की अपनी क्षमता और इच्छा को देखते हुए, भारत ऐसे मामूली ट्रैक रिकॉर्ड से संतुष्ट नहीं रह सकता है। जब श्री विक्रमसिंघे ने लगभग एक साल पहले नई दिल्ली का दौरा किया था, तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत द्वारा प्रस्तावित परियोजनाओं में देरी पर चिंता व्यक्त की थी। त्रिंकोमाली में एक तेल भंडारण सुविधा का संयुक्त विकास एक ऐसी परियोजना है जिस पर वर्षों से चर्चा हो ही रही है। नई दिल्ली के लिए सांत्वना की बात यह हो सकती है कि लगभग एक साल पहले कोलंबो ने उत्तरी कोरिया के बीजिंग के लिए 300 मिलियन डॉलर की एक आवास परियोजना को को उलट दिया था।

**गहरा संबंध**

श्रीलंका में चीन द्वारा वित्त पोषित बुनियादी ढांचा परियोजनाएं बहुत अच्छी लग सकती हैं, लेकिन भारत-श्रीलंका के संबंध अधिक गहरे और अधिक जटिल हैं। जैसा कि श्री मोदी ने भी कहा है कि अच्छे समय और बुरे समय में, भारत हमेशा से श्रीलंका के लिए खड़ा रहा है। 2004 में सुनामी और जून में श्री मोदी की कोलंबो यात्रा (ईस्टर के दिन आतंकी हमला के बाद श्रीलंका जाने वाले पहले विदेशी गणमान्य व्यक्ति) भारतीय दृष्टिकोण की ईमानदारी को दर्शाती है।

इन गहरे संबंधों के बावजूद, सच यह है कि भारत और श्रीलंका ने समकालीन समय में द्विपक्षीय संबंधों में कुछ अप्रियता देखी है। 1983 की तमिल विरोधी तबाही ने भारत को श्रीलंका के तमिल सवाल में शामिल कर लिया था। मार्च, 1990 में इंडियन पीस कीपिंग फोर्स की वापसी और मई, 1991 में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या जैसी घटनाओं ने नई दिल्ली को गृहयुद्ध के अंतिम चरण तक पहुँचने तक कोलंबो से दूर ही रहने के लिए मजबूर कर दिया। मई, 2009 में समाप्त हुए युद्ध के आखिरी पांच महीनों में, भारत ने बार-बार श्रीलंका को यह संदेश दिया कि नागरिकों के अधिकारों और कल्याण को लिट्टे के खिलाफ युद्ध में शामिल नहीं करना चाहिए।

हालांकि, उनकी सभी कमियों के साथ, 1987 के राजीव गांधी-जयवर्धने समझौता और श्रीलंका के संविधान में 13वां संशोधन, प्रांतों के लिए शक्तियों के विचलन की परिकल्पना की, जो अभी भी जातीय प्रश्न को संबोधित करने के लिए एक ठोस रूपरेखा प्रदान करती है। एक राजनीतिक समझौते के अलावा, उत्तरी और पूर्वी प्रांत, जो श्रीलंका की जीडीपी में 10% से भी कम योगदान देता है, को आर्थिक विकास की आवश्यकता है। भारत सरकार इस क्षेत्र में योगदान देने के तैयार है, लेकिन जो वो चाह रही है वह तमिल राजनीतिक नेतृत्व की उचित प्रतिक्रिया है।

जब दो महीने में श्रीलंका को नया राष्ट्रपति मिल जायेगा, तो भारत को उस नेता के साथ बैठक न केवल सभी लंबित अवसंरचना परियोजनाओं को शीघ्र शुरू करने के लिए करनी चाहिए, बल्कि श्रीलंका के युवाओं के समग्र विकास में भी योगदान दिया जा सके, इसके लिए भी करना चाहिए।

इसके अलावा, नई दिल्ली को श्रीलंका में सबसे पिछड़े माने जाने वाले पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले तमिलों के विकास संबंधी मुद्दों पर अपनी रुचि बनाए रखनी चाहिए। यह लगभग 95,000 शरणार्थियों के स्वैच्छिक प्रत्यावर्तन को प्रोत्साहित करने के लिए एक बेहतर प्रयास होगा। इस दिशा में एक कदम के रूप में, अधिकारियों को भी जल्द से जल्द तलाईमन्नार और रामेश्वरम के बीच नौका सेवाओं को फिर से शुरू करना चाहिए।

ईमानदारी से समर्थित एक सौम्य और व्यापक दृष्टिकोण वाला उद्देश्य, न केवल भारत को श्रीलंका में अधिक सम्मान दिलाएगा, बल्कि अन्य देशों को भी श्रीलंका के साथ अपने संबंधों की ताकत के बारे में संदेश देगा।

## भारत-श्रीलंका संबंध

### संक्षिप्त इतिहास और पृष्ठभूमि

- भारत, श्रीलंका का एकमात्र और सबसे करीबी पड़ोसी है जोकि पाक जलडमरूमध्य द्वारा अलग होता है।
- दोनों देश बौद्धिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई समागम की विरासत को बांटते हुए 2500 से अधिक वर्षों के एक रिश्ते का हिस्सा रहे हैं।
- दोनों देशों ने आम तौर पर एक मिलनसार संबंध साझा किया है लेकिन विवादास्पद श्रीलंकाई नागरिक युद्ध और युद्ध के दौरान भारतीय हस्तक्षेप की विफलता से प्रभावित हुए।
- दोनों ही देशों का दक्षिण एशिया में एक रणनीतिक स्थान पर कब्जा है तथा हिंद महासागर में एक आम सुरक्षा छतरी का निर्माण करने की मांग की है।
- ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से दोनों देश एक-दूसरे के काफी करीब हैं, 70% श्रीलंकाई वर्तमान में भी थेरवाद बौद्ध धर्म का लगातार पालन करते आ रहे हैं।
- हाल के वर्षों में श्रीलंका, चीन के करीब हो गया है, विशेष रूप से नौसेना समझौतों के संदर्भ में। भारत ने संबंधों में सुधार के लिए एक परमाणु ऊर्जा समझौते पर हस्ताक्षर किया है।
- श्रीलंका के राजा देवनम्पिया टिस्सा के शासनकाल के दौरान भारतीय सम्राट अशोक के पुत्र आदरणीय महिंदा द्वारा चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध धर्म का श्रीलंका में परिचय हुआ।
- इस समय के दौरान, बोधि वृक्ष का एक पौधा श्रीलंका में लाया गया तथा प्रथम मठ और बौद्ध स्मारक स्थापित किए गए।
- इनके अलावा, इसुरुमुनि-विहार और वेस्सागिरी-विहार पूजा के महत्वपूर्ण केंद्र बने हुये हैं।
- अशोक को पथमक-चैत्य, जम्बोकोला-विहार और हत्थाल्हाका-विहार तथा चायखाने के निर्माण का भी श्रेय दिया जाता है।
- पाली पहले एक मौखिक परंपरा के रूप में संरक्षित थी, जिसे 30 ईसा पूर्व के आस-पास लिखित रूप में करने के लिए श्रीलंका प्रतिबद्ध था।
- श्रीलंका में सबसे अधिक तमिलों के पूर्वज भारत से थे।

### श्रीलंका का भू राजनीतिक महत्व

- एक द्वीप राज्य के रूप में हिंद महासागर क्षेत्र में श्रीलंका का स्थान कई प्रमुख शक्तियों के लिए रणनीतिक, भू-राजनीतिक प्रासंगिकता का रहा है।
- श्रीलंका के रणनीतिक स्थान में पश्चिमी हितों को उजागर करने वाले कुछ उदाहरण 1948 के ब्रिटिश रक्षा और विदेश समझौते एवं 1962 के यूएसएसआर के साथ समुद्री समझौते हैं।
- यहाँ तक कि जे.आर.जयवर्धने (1978-1989) और रणसिंघे प्रेमदासा (1989-1993) के कार्यकाल के दौरान, श्रीलंका को वॉयस ऑफ अमेरिका ट्रांसमिटिंग स्टेशन का निर्माण करने के लिए चुना गया (संदेह है कि यह खुफिया जानकारी जुटाने के उद्देश्यों और हिंद महासागर की इलेक्ट्रॉनिक निगरानी के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है)।
- यह राजपक्षे के कार्यकाल के दौरान बड़े पैमाने पर चीनी भागीदारी थी, जिसने हाल के वर्षों में सबसे गहरे विवाद को जन्म दिया।
- चीन, हिंद महासागर के साथ-साथ ग्वादर (पाकिस्तान), चटगाँव (बांग्लादेश, क्युक फलू (म्यांमार) और हम्बनटोटा (श्रीलंका) में, दक्षिण में सभी के लिए अत्याधुनिक विशाल बंदरगाहों का निर्माण कर रहा है।
- चीन की मोती की रणनीति का उद्देश्य हिंद महासागर में प्रभुत्व स्थापित करने के लिए भारत को घेरना है।
- 2015 के बाद, श्रीलंका अभी भी पोर्ट सिटी परियोजना के लिए और श्रीलंका में चीनी वित्त पोषित बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को जारी रखने के लिए चीन पर बहुत अधिक निर्भर करता है।
- हालांकि हंबनटोटा बंदरगाह कथित तौर पर नुकसान कर रहा है, लेकिन इसके रणनीतिक स्थान के कारण भी विकास की संभावनाएं हैं।
- श्रीलंका में संचार के सबसे व्यस्त समुद्री लेन के बीच स्थित अत्यधिक सामरिक बंदरगाहों की सूची है।
- श्रीलंका का कोलंबो पोर्ट दुनिया का 25वां सबसे व्यस्त कंटेनर पोर्ट है और त्रिंकोमाली में प्राकृतिक गहरे पानी का बंदरगाह दुनिया का पाँचवां सबसे बड़ा प्राकृतिक बंदरगाह है।
- दूसरे विश्व युद्ध के दौरान पूर्वी बेड़े और ब्रिटिश रॉयल नेवी का मुख्य आधार ट्रिनकॉले शहर था।
- इस प्रकार श्रीलंका का स्थान वाणिज्यिक और औद्योगिक दोनों उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है और इसका उपयोग सैन्य अड्डे के रूप में किया जा सकता है।

### वाणिज्यिक संबंध

- भारत से प्रत्यक्ष निवेश के लिए श्रीलंका लंबे समय से एक प्राथमिकता स्थल रहा है।

- सार्क देशों के बीच श्रीलंका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। भारत विश्व स्तर पर श्रीलंका का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार है।
- श्रीलंका में भारत का निर्यात 2015-17 में 5.3 बिलियन डॉलर था, जबकि देश से इसका आयात $743 मिलियन था।
- मार्च, 2000 में लागू हुए भारत-श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौते के बाद दोनों देशों के बीच व्यापार विशेष रूप से तेजी से बढ़ा।
- जबकि 2000 के बाद से ISFTA के लागू होने के दौरान भारत के लिए श्रीलंका का निर्यात पिछले कई वर्षों के दौरान काफी बढ़ा है।
- हालांकि, भारत के श्रीलंका के निर्यात में उच्च वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप व्यापार संतुलन का विस्तार हुआ है। यह काफी हद तक भारतीय आवश्यकता को पूरा करने के लिए श्रीलंका से निर्यात क्षमता की कमी और हमारे निर्यात की प्रतिस्पर्धा के कारण भारत से आयात में वृद्धि के कारण है।

**भारत-श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौता** (ISFTA)

- द्विपक्षीय व्यापार के लिए मुख्य ढांचा भारत-श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौता (ISFTA) द्वारा प्रदान किया गया है, जिसे 1998 में हस्ताक्षरित किया गया था और मार्च, 2000 में लागू किया गया था।
- ISFTA पर हस्ताक्षर करने में मूल आधार दो अर्थव्यवस्थाओं, स्थानीय सामाजिक-आर्थिक संवेदनशीलता, घरेलू हितों की रक्षा के उपायों की सुरक्षा और राजस्व निहितार्थों के बीच विषमता थी, ताकि अल्पावधि में उच्च राजस्व उत्पन्न करने वाली टैरिफ लाइनों को प्रभावित न किया जा सके।
- ISFTA लाभ प्राप्त करने के लिए, भारत और श्रीलंका के बीच निर्यात की गई वस्तुओं को मूल मानदंडों के नियमों का पालन करना होता है।

**रक्षा और सुरक्षा सहयोग**

- श्रीलंका और नई दिल्ली के पास सुरक्षा सहयोग का लंबा इतिहास है। हाल के वर्षों में, दोनों पक्षों ने अपने सैन्य-से-सैन्य संबंधों में लगातार वृद्धि की है।
- भारत और श्रीलंका संयुक्त सैन्य (मित्र शक्ति) और नौसेना अभ्यास (SLINEX) आयोजित करते हैं।
- भारत श्रीलंका की सेनाओं को रक्षा प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।
- भारत, श्रीलंका और मालदीव द्वारा त्रिपक्षीय समुद्री सुरक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, ताकि निगरानी, एंटी-पायरेसी ऑपरेशन में सुधार हो सके और हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री प्रदूषण को कम किया जा सके।
- अप्रैल, 2019 में, भारत और श्रीलंका ने भी ड्रग और मानव तस्करी का मुकाबला करने पर समझौता किया।
- भयानक ईस्टर बम विस्फोट के बाद, श्रीलंकाई प्रधानमंत्री ने दी गई सभी 'मदद' के लिए भारत सरकार को धन्यवाद दिया।
- हमलों से पहले भारतीय एजेंसियों द्वारा जारी किए गए अलर्ट ने विशेष रूप से कट्टरपंथी आत्मघाती हमलावरों के चर्चों और कोलंबो में भारतीय उच्चायोग पर हमला करने के बारे में चेतावनी दी थी।

**मुद्दे और संघर्ष**

- हाल के वर्षों में, चीन ने नई अवसंरचना परियोजनाओं के लिए श्रीलंका सरकार को अरबों डॉलर का ऋण दिया है, जो हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की रणनीतिक गहराई के लिए अच्छा नहीं है।
- श्रीलंका ने हंबनटोटा के रणनीतिक बंदरगाह को भी सौंप दिया, जिसे चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव की 99 साल की लीज पर चीन में अहम भूमिका निभाने की उम्मीद है।
- श्रीलंका में विपक्षी दलों और ट्रेड यूनियनों ने पहले ही बंदरगाह सौदे को अपने देश की राष्ट्रीय संपत्ति चीन को बेचने के रूप में करार दिया है।
- चीन ने हथियारों की आपूर्ति के साथ-साथ श्रीलंका को उसके विकास के लिए भारी ऋण भी प्रदान किया है।
- चीन ने श्रीलंका के बुनियादी ढांचे में भी पर्याप्त निवेश किया, जिसमें चीन हार्बर कॉरपोरेशन द्वारा कोलंबो अंतर्राष्ट्रीय कंटेनर टर्मिनल का निर्माण शामिल था।
- हालांकि, श्रीलंका और भारत के बीच संबंध सुधर रहे हैं। भारतीय चिंताओं को दूर करने के लिए कि हंबनटोटा बंदरगाह का इस्तेमाल सैन्य उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाएगा, श्रीलंका सरकार ने बंदरगाह पर वाणिज्यिक संचालन चलाने के लिए चीन की भूमिका को सीमित करने की मांग की है, जबकि यह सुरक्षा कार्यों की निगरानी रखता है।
- दोनों देशों ने असैनिक परमाणु सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं, जो किसी भी देश के साथ श्रीलंका की पहली परमाणु साझेदारी है।
- भारत, उत्तरी और पूर्वी प्रांतों में श्रीलंका के बुनियादी ढांचे के विकास में भी निवेश कर रहा है।
- हंबनटोटा पोर्ट पर चीन के घटनाक्रम का प्रतिकार करने के लिए भारत त्रिंकोमाली पोर्ट बनाने की भी योजना बना रहा है।

## संभावित प्रश्न ( प्रारंभिक परीक्षा )

1. भारत-श्रीलंका संबंधों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

   1. भारत और श्रीलंका के मध्य स्थित पाक जलसंधि बंगाल की खाड़ी और खम्भात की खाड़ी को जोड़ती है।
   2. भारत और श्रीलंका द्वारा संयुक्त सैन्याभ्यास 'मित्रशक्ति' का आयोजन प्रत्येक दो वर्ष पर किया जाता है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

## Expected Questions (Prelims Exams)

1. **Consider the following statements regarding the India-Nepal relations.**

   1. The Palk Strait between India and Sri Lanka connects the Bay of Bengal and the Gulf of Khambhat.
   2. The joint exercise 'Mitra Shakti' is organized by India and Sri Lanka every two years.

   Which of the above statements is/are correct?

   (a) Only 1 (b) Only 2
   (c) Both 1 and 2 (d) Nither 1 nor 2

## संभावित प्रश्न ( मुख्य परीक्षा )

**प्रश्न: चीन की आर्थिक निवेश की रणनीति भारत के लिए कई देशों में चुनौती स्वरूप परिलक्षित हुई है। श्रीलंका के विशेष संदर्भ में इस कथन का विश्लेषण कीजिए तथा भारत को क्या प्रयास करने की आवश्यकता है, वह भी दर्शाइये।**

**China's economic investment strategy has reflected a challenge for India in many countries. Analyze this statement in the context of Sri Lanka and also discuss what efforts India needs to make.**

**(250 Words)**

**नोट : 28** सितंबर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (d) होगा।